बाल शोध मेला एक नवाचार के रूप में

प्रधान पाठिका का परिचय

1–	नाम	:	**श्रीमती आशा साहू**
2–	पद एवं कार्यरत **शाला** का पूर्ण पता पिन कोड/टेलीफोन सहित	:	प्रधान पाठक **शा**स.प्रा.**शा**ला पनगांव संकुल केन्द्र – पनगांव विकासखण्ड – बलौदाबाजार जिला – बलौदाबाजार भाटापारा (छ.ग.) पिन – 493332 मो.– 9926182179
3–	**शि**क्षक के निवास का पूर्ण पता पिन कोड सहित	:	बी.– 6 कृष्णायन कालोनी बलौदाबाजार तहसील – बलौदाबाजार जिला – बलौदाबाज़ार भाटापारा (छ.ग.) पिन – 493332
4–	**शि**क्षक का स्थायी पता पिन कोड सहित	:	बी.– 6 कृष्णायन कालोनी बलौदाबाजार तहसील – बलौदाबाजार जिला – बलौदाबाजार भाटापारा (छ.ग.) पिन – 493332
5–	क्या विद्यालय का स्तर	:	प्राथमिक
6–	जिला व राज्य	:	जिला – बलौदाबाजार भाटापारा राज्य – छत्तीसगढ़
7–	जन्म तिथि	:	17.09.1974
8–	वर्तमान आयु	:	48 वर्ष
9–	सेवा निवृत्ति की तिथि	:	17.09.2036
10–	कुल सेवा अवधि **शि**क्षक के रूप में कार्यारंभ तिथि	:	24 वर्ष **शि**.क.वर्ग 03 – 25.07.1998 प्रधान पाठक – 16.12.2010

शाला का सन्दर्भ

छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदाबाजार जिले में पनगाँव संकुल में शासकीय प्राथमिक शाला पनगाँव जो कि बलौदाबाजार से 7 किलोमीटर की दुरी पर अवस्थित है. यहाँ की कुल जनसँख्या लगभग 7000 है जो मुख्य रूप से ग्रामीण परिवेश और वंचित क्षेत्र है. पनगाँव सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है और ज्यादातर लोग कृषि पर निर्भर हैं. यहाँ शिक्षा को लेकर जागरूकता का अभाव नजर आता है. रोजगार और व्यवसाय के अभाव के कारण लोगों को अक्सर बच्चों के साथ पलायन करते हुए पाया गया है. शाला की बात करें तो यहाँ कुल दर्ज बच्चों की संख्या 345 है. कुल बच्चों की संख्या में से बालिका की संख्या 179 तथा बालकों की संख्या 166 है. कुल छात्रों में से 130 बच्चे अनुसूचित जाति, 50 बच्चे अनुसूचित जनजाति तथा शेष बच्चे 165 बच्चे पिछड़े वर्ग से आते हैं. उपरोक्त आंकड़े बताते हैं कि शाला के अधिकतर बच्चे समाज के वंचित वर्ग से आते हैं. इन सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बहुत ही अहम् हो जाता है ताकि समाज के कुरितियों से लड़ा जा सके और विश्वास तथा इज्जत के साथ जीवन यापन किया जा सके. शाला में शिक्षकों की संख्या 11 है तथा शिक्षक छात्र अनुपात 1:31 है. शाला में आधारभूत संरंचना के रूप में कुल 8 कमरे है और बच्चों के लिए भूमि पर बैठने की व्यवस्था है. शाला का अपना एक पुस्तकालय है और पर्याप्त मात्रा में पुस्तक उपलब्ध हैं. भवन के अलावा खेल के मैदान संतोषजनक अवस्था में हैं.

चुनौतियाँ

जब प्रधान पाठक के रूप में मुझे इस शाला में कार्य करने का अवसर मिला तो मेरे मन में कई प्रकार के संशय थे. मुझे यहाँ का माहौल काफी नकारात्मक लगा और मन में कई प्रकार के दुविधा उत्पन्न होने लगे. भवन और स्कुल का परिवेश औसत से ख़राब हालत में थें. शाला और समुदाय के बीच कई प्रकार के मतभेद थें और विश्वास का अभाव था. शिक्षक और पालकों के मध्य के सम्बन्ध चुनौतीपूर्ण थे तथा शिक्षकों के प्रति सम्मान का अभाव और हेय दृष्टि से देख जाता था. ज्यादातर बच्चे अपने कक्षा अनुरूप सिखने के प्रतिफल को प्राप्त नहीं कर पाए थे जिसका मुख्या कारण बुनियादी साक्षरता और गणितीय ज्ञान पर पर्याप्त रूप से कार्य नहीं किया गया. शिक्षकों द्वारा पारम्परिक विधियों से कक्षा संचालन भी बच्चों के सिखने को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही थी. समाज के वंचित वर्ग में स्कुल छोड़ने की दर बढ़ी है, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव, अधिनियम का सही ढंग से क्रियान्वयन न हो पाना, समुदाय की निष्क्रिय भागीदारी, शाला में नेतृत्व का अभाव, अकादमिक चुनौतियों पर चर्चा और मार्गदर्शन का अभाव, शिक्षकों के पेशेवर विकास के अवसर और प्रभावशीलता में कमी इत्यादि समस्याएं देखी जा सकती हैं. हालाकि उपरोक्त चुनौतियों के कई कारण हो सकते हैं और अधिकतर स्कुल उपरोक्त चुनौतियों से जूझ रहें है लेकिन इन सभी प्रक्रियाओं में बच्चों का नुकसान सबसे अधिक हो रहा है.

समाधान

बाल शोध मेला

कोरोना काल के पश्चात् स्कूली शिक्षा के अंतर्गत बच्चों के सीखने का स्तर गंभीर चिंता का विषय बन गया था. यदि बच्चों के इस लर्निंग गैप के बारे में विचार नहीं करेंगे तो बच्चे अपनी कक्षा स्तर से तीन वर्ष पीछे चले जाते. इसलिए मैंने सोचा की कुछ नवाचार तरीकों के माध्यम से इस लर्निंग लॉस को दूर करने का प्रयास किया जाये. बच्चों के मार्ग में आ रही बाधा को खेल, खोज, सक्रियता एवं गतिविधि आधारित शिक्षा को शामिल करके वातावरण निर्माण सुनिश्चित करना था. इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों को अपने परिवेश से जोड़ते हुए अपने जीवन को लेकर बेहतर रूप से समझ विकसित कर सकें. इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा बाल शोध मेला की परिकल्पना की गयी. जिसका नाम चिर्गुन रखा गया. जहाँ मुख्या रूप से बच्चे अपने परिवेश को जाने, समझें और कुछ स्वयं खोजे और इसके माध्यम से ज्ञान अर्जन करें. इस क्रम में क्या, क्यों और कैसे के कारणों को जानने की समझ विकसित हो. बच्चों में वैज्ञानिक सोचए खोजी प्रवृति, कल्पना शक्ति का विकास एवं विभिन्न कौशल निर्मित कर पाने की दिशा में सार्थक कदम रहा. इस आयोजन में

विद्यालय के सभी बच्चे भाग लिए और अपने शोध, प्रयोग, क्रियाकलाप एवं गतिविधियों को साझा किये, जिसमे शाला परिवार के सभी सदस्य अपना पूर्ण सहयोग दिए. बाल शोध मेले का आयोजन प्राथमिक शाला पनगाँव में 5.03.2022 को किया गया. इस कार्यक्रम में आस पास के स्कूली बच्चे एवं अन्य संकुल के शिक्षक-शिक्षिकाएं, पालक एवं ग्रामीण समुदाय, जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण उपस्थित होकर बाल शोध मेला का लाभ उठाया. यह आयोजन मुख्या रूप से 100 दिवसीय भाषायी पठन-पाठन, गणितीय कौशल, बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान पर आधारित था.

बाल शोध मेला के उद्देश्य

- बच्चे सामूहिक भागीदारी को समझे और कार्यों को साझा करें.
- बच्चे के लिए आनंददायी, आत्मविश्वास, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, सीखने की ललक उत्पन्न करने के लिए वातवरण तैयार करना.
- बच्चे कक्षा के अध्ययन को अपनी दैनिक जीवन से जोड़ सके.
- बच्चों में वैज्ञानिक सोच एवं दृष्टिकोण निर्मित हो सके.
- बच्चे गणितीय अवधारणा को दैनिक जीवन से जोड़कर उसके अनुप्रयोग की समझ विकसित कर सकें.

कार्यक्रम की रुपरेखा

कार्यक्रम की रुपरेखा को शाला परिवार एवं अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा तैयार की गयी जिसके अनुसार

- विद्यालय स्तर पर चर्चा
- टॉपिक का चुनाव
- बच्चों का समूह में विभाजन
- समूहीकृत बच्चों के साथ एक मेंटर शिक्षक की भूमिका सुनिश्चित करना.
- बच्चों के खोज, प्रयोग, निरिक्षण, तथा अवलोकन का दस्तावेजीकरण करना.
- शोध मेले के पहले की तैयारी सिनिश्चित करना.
- बाल शोध मेला में बच्चों द्वारा अपना प्रस्तुतीकरण देना.
- फीड बैक
- दस्तावेजीकरण

बाल शोध मेला को लेकर चर्चा

बाल शोध मेला के सम्बन्ध में शाला परिवार और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्यों के साथ चर्चा हुई और उनके मार्गदर्शन में उक्त मेले का स्वरुप तैयार किया गया. क्या होना चाहिए, कब होना चाहिए, नवाचार को लेकर कैसे कार्य किया जाये, विषय का चुनाव इत्यादि मुद्दों पर चर्चा हुई.

बच्चों का समूह विभाजन

चर्चा के बाद बच्चों को समूह में बाँटा गया. कक्षा 3 से 5 तक कुल 220 बच्चे थें. उनमे 20 बच्चों को वालंटियर का काम दिया गया. 220 बच्चों को 20-20 बचों को कुल 10 समूहों में काम दिया गया. बच्चों के कक्षा के स्तरानुसार विषयगत समूह कार्य में बांटा गया. इसमें कक्षा 3 के बच्चों ने कक्षा 5 के बच्चों के साथ मिलकर अलग-अलग विषयों के चयनित टॉपिक पर शोध कार्य किया.

कक्षा 1 एवं 2 के कुल बच्चे 119 थे. जिसमे से 40 बच्चे सम्मिलित हुए. उन्हें 10-10 के समूहों में बांटकर ऍफ़ एल एन के तहत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिट्टी से खिलौने बनाना, हहव भाव के साथ गीत कहानी, जनउला पहेली आकृति निर्माण, पैटर्न इत्यादि पर कार्य किए.

कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों को 100 दिवसीय भाषाई पठन एवं गणितीय कौशल को लेकर अलग-अलग तरह के शोध करने के लिए दिए गए. कक्षा 3 से 5 तक के कुल 220 बच्चों ने भागीदारी निभाए. इसमें से कुल 50 बच्चों को 5-5 के समूह में बांटकर चनित विषय पर शोध कार्य किये गए.

इस पुरे आयोजन के दौरान कक्षा 4 के बच्चों ने छत्तीसगढ़ी लोकनृत्य को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जिसकी पूरी तैयारी शिक्षकों द्वारा कक्षा कक्ष में की गयी थी.

शिक्षकों की भूमिका सुनिश्चित करना

चिरगुन मेले की तैयारी के लिए शिक्षकों ने बढ़चढ़ कर अपनी सहभागिता प्रदान की. बच्चों के साथ मिलकर तैयारी, व्यवस्था, प्रबंधन जैसी अलग-अलग भूमिकाओं में शिक्षकों ने अपना योगदान दिया. शिक्षकों को अलग-अलग समूहों में बांटकर कार्य किये गए. जैसे की 4 शिक्षकों ने मिलकर गणितीय कौशल पर बच्चों को मार्गदर्शन किये तथा 5 शिक्षकों ने मिलकर भाषा के बुनियादी कौशलों को लेकर चयनित विषयों पर चर्चा और मार्गदर्शन किया तथा उन्हें मेंटरिंग करने का कार्य किया. शाला के शिक्षकों ने मिलकर प्रबंधन व्यवस्था तथा मेले के दिन के कार्य सुव्यवस्थित व्यवस्थापन की जिम्मेदारी ली.

तैयारी के लिए समय निकालना

मेले की तैयारी के लिए शुरूआती दौर के सप्ताह के दो दिन बच्चों के साथ किये गए कार्य पर चयनित विषय पर बातचीत की गयी. प्रतिदिन बच्चों के साथ मिलकर उनके किये गए कार्यों पर चर्चा परिचर्चा, सुझाव दिए गए. यह कार्य करने का समय शाला के समय सारणी के हिसाब से अंतिम कालखंड में रखा गया था. क्योंकि विद्यालय प्रातः कालीन होने के कारण हम बच्चों के साथ 2 घंटा अतिरिक्त समय देकर बच्चों के द्वारा टॉपिक से सम्बंधित सर्वे कार्य, निरीक्षण, अवलोकन इत्यादि कार्यों को अपने समूह में साझा कर रहे थे.

बच्चों के खोज प्रयोग निरिक्षण अवलोकन का दस्तावेजीकरण

बच्चे तैयारी के साथ-साथ अपने द्वारा किये गए खोज कार्यों का, निरीक्षणों का दस्तावेजीकरण भी कर रहे थे. जिसमे सर्वे, रिपोर्ट, साहित्य इकठ्ठा करना, जानकारी लेना यह सब लिखित एवं चित्र स्वरुप में शामिल थे.

विषय का चुनाव

बाल शोध मेला के अंतर्गत बहुत सारे नए-नए विषय आ रहे थे. जिसमे बच्चों और शिक्षकों की रूचि नजर आ रहे थे. बच्चों के रुझान और शिक्षकों से बातचीत कर हमने 100 दिवसीय भाषाई पठन पाठन एवं गणितीय कौशल के कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए व बच्चों के शिक्षा स्तर को समझते हुए कुछ विषयों का चुनाव किया जिसमे

1 भाषा:- कहानिवाचन हाव भाव के साथ, छत्तीसगढ़ी कहानियों का संकलन, कविता गीत का प्रदर्शन, शब्द कोष बनाना, स्वतंत्र लेखन, हस्त पुस्तिकाएं बनाना और सन्दर्भ से जुड़ीं हुई चीजों पर बातचीत करना.

2 गणित:- आंकड़ों का निरूपण, सर्वे, मापन, मुद्रा, आकृति निर्माण, पैटर्न, संख्या के खेल, सैम विषम इत्यादि.

3 पर्यावरण:- पेड़ पौधो की जानकारी, अनाज एवं विभिन्न प्रकार की बीजों की जानकारी तथा नजरी नक्शा.

4 हमारी संस्कृति:- छत्तीसगढ़ी वेशभूषा एवं आभूषणों की जानकारी, स्थानीय खेल, लोकनृत्य, लोकगीत, जनउला, छत्तीसगढ़ी व्यंजन एवं हमारे प्रदेश की जानकारी.

5 बच्चों द्वारा बनायीं गयी वस्तुएं:- मिट्टी के खिलौने, शून्य निवेश वस्तुओं से उपयोगी चीजे बनाना एवं पेपर वर्क.

6 शिक्षकों द्वारा:- बुनियादी गणित एवं भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी कुछ शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री का निर्माण.

7 अन्य:- सभी के मनोरंजन के लिए सेल्फीजोन

स्टालों की सूचि एवं प्रस्तुतिकरण

मेले का आयोजन 10 बजे आरम्भ हुआ. शिक्षकगण एवं बच्चे उत्सुकता के कारण समय से पहले विद्यालय पहुंचे और अपने अपने कार्नर को सुव्यवस्थित किये. सभी अतिथिगण एवं समुदाय के लोगो ने विभिन्न कॉर्नर में भ्रमण फीडबैक दिए एवं अंत में भोजन ग्रहण किये. शोध कॉर्नर 10 से 12 दिन में तैयार किये गए इन शोध कार्यों को बच्चों ने समूह में अलग अलग स्टाल लगाकर बहुत ही सहजता के साथ प्रस्तुतीकरण किये जो उनके स्वयं के अनुभव थे.

फन कॉर्नर

बच्चों द्वारा तैयार किये गए फन कॉर्नर में लोगों के मनोरंजन के लिए सेल्फीजोन रखा गया. बच्चे फोटो ग्राफी के महत्व को जाने और समझे. जहाँ सभी लोग फोटो खिंचाकर इसका भरपूर आनंद उठाया.

कहानी कविता और हमारी भाषा

बच्चों द्वारा स्थानीय लोक गीत एवं लोककथाओं को समुदाय के सतत साझा किया गया. छत्तीसगढ़ी, हिंदी एवं अंग्रेजी शब्दकोष का निर्माण कर भाषा को एक दुसरे से जोड़ने का प्रयास किया.

गणित कॉर्नर

बच्चों ने मुद्रा के प्राचीन समय से लेकर अब तक के प्रचालन को जाने समझे और समुदाय से साझा किया.

शिक्षक कॉर्नर

शिक्षकों ने अपने द्वारा कई नई चीजों को जोड़कर कुछ नए टी एल एम् का भी निर्माण का भी काम किया. बच्चों की सीखने में रूचि बनाने में मदद करे. यह बहुत ही आकर्षक और सीखने में रूचि पैदा करने वाला था.

हमारी संस्कृति

बच्चों ने हमारी संस्कृति से जुड़े आभूषण, वेशभूषा एवं व्यंजनों के बारे में जानकारी हासिल कर उनके महत्व को समझा, साथ ही साथ हमारे तीजा त्यौहार एवं उनसे जुड़े सांस्कृतिक पहलुओं को समझे और आभूषण पहनने से होने वाले शारीरिक लाभ को जाने और समुदाय से चर्चा किये.

फीडबैक

यह आयोजन 100 दिवसीय भाषाई पठन एवं गणितीय कौशल एवं ऍफ़ एल एन की गतिविधि पर आधारित है. जो कि बहुत ही सकारात्मक रहा. शिक्षकों का सहयोग एवं टीम वर्क की भावना मुझे बहुत अच्छा लगा. बच्चे बहुत हो प्रसन्न रहे. यह आयोजन बहुत ही सराहनीय रहा एवं अन्य स्कूलों के लिए प्रेरणाश्रोत रहा.

वि खं स्रोत समन्वयक

बलौदाबाजार

यह मेला मुझे बहुत अच्छा लगा बच्चों के प्रस्तुतीकरण से लेकर उनकी वेशभूषा, सजावटए शोध कॉर्नर, भोजन व्यवस्था, सभी अच्छा लगा. साथ ही साथ शिक्षकों की सहयोगी भावना तथा प्रधान पाठिका की प्रबंधन व्यवस्था बहुत अच्छा लगा. यह आयोजन हम सब के लिए प्रेरणादायी था.

श्रीमती रामेश्वरी ध्रुव

शा. प्रा. शा. रवान

संकुल रवान

इस मेले के आयोजन से बच्चों की प्रतिभा उभर कर सामने आई, खोजी प्रवृति का विकास हुआ, अपनी संस्कृति को पहचानने, शिक्षक और बच्चों का यह प्रयास बहुत सराहनीय है. जन समुदाय का सहयोग भी अच्छा लगा.

श्रीमती टीकेश्वरी पटेल

प्र. शा लवनबन

संकुल पनगाँव

बाल शोध मेला मुझे बहुत ही अच्छा लगा. सभी बच्चे शिक्षको के मार्गदर्शन से अपना सभी शोध कार्य स्वयं से किये. प्रत्येक स्टाल में हमें कुछ न कुछ नया सीखने को मिला. ऐसे आयोजन हम भी करना चाहेंगे.

श्रीमती शालिनी कश्यप

शा प्रा शा रवान

संकुल रवान

सरकारी स्कूल के बाचों में छिपी हुई प्रतिभा को उभरने की दिशा में किया गया शानदार प्रयास. सभी स्कूलों में शिक्षक अगर इस तरह के मेले का आयोजन करें तो सभी बच्चे व शिक्षकों में सीखने सिखाने की रूचि बढ़ेगी.

श्रीमती योगेश्वरी साहू

शा.प्रा. शा. डोटोपार

संकुल गिन्दोला

मेरा अनुभव

बाल शोध मेला को लेकर मेरा अनुभव मेरे ही लिए नहीं अपितु मेरे अन्य शिक्षक साथियों एवं बच्चों के लिए बहुत उत्साहवर्धक एवं प्रेरनादायी रहा. बाल शोध मेला के आयोजन को सुनते ही हम सब में क्या, क्यों, कैसे और कब इस तरह के कई सवाल आये लेकिन जब हमने इस आयोजन को लेकर पूरी विस्तृत बातचीत रखी तथा इसके अलग-अलग पग्लुओं को समझने की कोशिश की जिसमे अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के द्वारा विस्तृत जानकारी एवं इसे हम बच्चों के पढने लिखने में कैसे मदद कर सकते हैं और एक नवाचारी तरीके से बच्चों को सिखाने का प्रयास कर सकते हैं. बाल शोध मेला अपने आप में एक अलग पहचान देने वाला साबित हुआ. जैसा कि बाल मतलब बच्चे और शोध का अर्थ बच्चों द्वारा किये गए अलग-अलग विषयों पर किये गए खोज कार्य से है. जो एक नई जानकारी, जिज्ञासा और सोचने की क्षमता को एक नया राह दिखाने वाला साबित हुआ.

शुरूआती दौर में यह कार्यक्रम बहुत ही चुनौतीपूर्ण लग रहा था. जिसमे बच्चों द्वारा किये जाने वाले शोध कार्य पर समुदाय के द्वारा सवाल करना, कभी दरवाजे बंद कर देना एवं शिक्षकों के द्वारा निराशाजनक वाक्यों का प्रयोग कहीं न कहीं हतोत्साहित करने वाला था पर बच्चों के कार्य की समीक्षा को देखते हुए और अपना धैर्य इसको आगे ले जाने में और एक बड़े स्वरुप के आयोजन में मदद कर रहा था. हर सप्ताह बच्चों के द्वारा किये गए कार्य की सराहना करना एवं उन्हें प्रोत्साहन करना, उनका आत्मविश्वास बढाते रहना और शिक्षकों से नियमित बातचीत कर उनके निराशाजनक विचारों को कैसे सकारात्मक रास्ते पर लेकर जाए. इसके लिए सतत प्रयासरत रहना मेरे लिए बड़ी उपलब्धि के रूप में सामने निकलकर सामने आया. मुझे भी बच्चों के साथ मिलकर नयी-नयी चीजों को जानने समझने का मौका मिला एवं शिक्षकों के कौशलों को समझने का अवसर मिला. बच्चों ने गणित और भाषा के बुनियादी चीजों को सहज करके सिखने का एवं विषयों को लेकर उनकी रूचि एवं रुझान को समझने का एक अच्छा अवसर मिला. जैसाकि गणित विषय जो बच्चों को बहुत कठिन लगता था लेकिन करके सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते नजर आये.

समुदाय की और से देखा जाए तो बहुत ही सराहनीय सहयोह एवं सहभागिता मिली. मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि हमारे गाँव के लोगों ने इस आयोजन में शामिल होकर बच्चों द्वारा किये गए कार्यों की सरहना की और नै चीजो को जाना और समझा. मै आशा करती हूँ कि कुछ चीजें ग्राम स्तर पर कार्यरत भी हो रही होगी जो सन्देश हमारे बच्चों ने समुदाय को दिया है. जैसे कि पेंड़ लगाना जरुरी है, गाँव में शिक्षा का स्तर क्या है, क्यों शिक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है. गाँव का स्वास्थ्य कैसे अच्छा होगा, इस पर क्या काम होना चाहिए इत्यादि.

मेरे लिए यह एक अद्भुत और सफल आयोजन रहा, जहाँ मैंने भी बहुत कुछ बच्चों के साथ मिलकर किया. नयी चीजों को जाना और समुदाय के सामने एक नवाचारी सिखने का माहौल प्रस्तुत किया. मै अपने सभी सहभागी विशेष रु से बच्चों को धन्यवाद देना चाहूंगी, जो इस आयोजन को सफल बनाने में प्रयासरत रहे.

इस मेले के आयोजन हेतु व्यय को लेकर मै बहुत चिंतित थी. लेकिन जब मैंने समुदाय से संपर्क एवं बैठक का आयोजन किया तो सभी ने अपना सहयोग देखर इस आयोजन को सफल बनाने में मदद की. मै यह आशा करती हूँ कि हम आने वाले समय में इस तरह के मेले का आयोजन अपनी शाला एवं संकुल स्तर पर कैसे कर रहे होंगे.

धन्यवाद